Year	Name of the Recipient	State
1991	1. Smt. A.G. Paul Primary Teacher Kendriya Vidyalaya NAL, CAMPUS, Bangalore (Primary)	Karnataka
	2. Ms. A. Jayalakshmi Primary Teacher Kendriya Vidyalaya Ashok Nagar, Madras (Primary)	Tamil Nadu
	3. Shri Anant Bhaskar Joshi; Principal Kendriya Vidyalaya No. 1 BEG & Centre, Khadki Pune (Secondary)	Maharashtra
	4. Shri R. Puttachari Drawing Teacher Kendriya Vidyalaya Nallapadu, Guntur Andhra Pradesh (Secondary)	Andhra Pradesh
1992	1. Smt. S.K. Slehria Primary Teacheress Kendriya Vidyalaya No. 1 Air Force Station Adampur, Distt. Jalandhar (Primary)	Punjab
	2. Smt. K.V. Vaishampayan Music Teacher Kendriya Vidyalaya IIT Powai, Bombay (Primary)	Maharashtra
	3. Smt. Seema K. Nagarkar SUPW Teacheres Kendriya Vidyalaya NDA, Khadakvasla, Pune (Secondary)	Maharashtra
	4. Smt. Jayalakshmy Pillai Principal Kendriya Vidyalaya Konjikode, Palakkad Kerala (Secondary)	Kerala

प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों का बीच में पढ़ाई छोड़ देना

3175. डा० जितेन्द्र कुमार जैन :
श्री राम जेठमलानी :

क्या मानव संसाधन विकास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि वर्ष 1991 के अंत तक देश में साक्षर व्यक्तियों की संख्या 52.19 प्रतिशत होने का अनुमान था ;

(ख) यदि हां, तो क्या यह भी सच है कि प्राथमिक स्तर तक की श्रेणी में 50 प्रतिशत बच्चे बीच में पढ़ाई छोड़ देते हैं ;

(ग) यदि हां, तो क्या सरकार ने इस प्रकार बच्चों द्वारा बीच में पढ़ाई छोड़ देने संबंधी कारणों का कोई अध्ययन कराया है और उन कारणों को दूर करने के लिए कौन-कौन से कदम उठाने का विचार है;

(घ) क्या सरकार ने बीच में पढ़ाई छोड़ देने वालों की प्रतिशतता को कम

करने के लिए कोई लक्ष्य निर्धारित किया है; और

(ङ) यदि हां, तो इस संबंध में क्या लक्ष्य निर्धारित किया गया है और सरकार के अनुसार साक्षर व्यक्ति की क्या परिभाषा है ?

मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग और संस्कृति विभाग में में उप मंत्री (कुमारी शैलजा) : (क) जी, हां।

(ख) से (घ) मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा तैयार किए गए वर्ष 1988–89 के नवीनतम उपलब्ध आंकडों के अनुसार प्राथमिक स्तर पर पढ़ाई बीच में छोड़ने वाले छात्रों की दर 47.9% थी। रा०शै० अनु० व प्र० परिषद् तथा अन्य शोध संस्थानों द्वारा किए गए शोध अध्ययनों के अनुसार, पढ़ाई बीच में छोड़े जाने के बहुत से कारण हैं। उनमें से मुख्य ये हैं :—

(1) सामाजिक-आर्थिक कारण ।

(2) पाठ्यक्रम को स्थानीय जरूरतों के अनुसार तैयार नहीं किया जाता।

(3) स्कूल अपर्याप्त है तथा स्कूलों में पढ़ाई भी पर्याप्त ढंग से नहीं होती है।

(4) बच्चों की विशेषकर लड़कियों की शिक्षा के प्रति अभिभावकों की उदासीनता ।

(5) विशेष रूप से पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों की उदासीनता के कारण, उपलब्ध शैक्षिक सुविधायें प्रयोग में नहीं लाई जातीं।

आठवीं पंचवर्षीय योजना के अन्त तक प्राथमिक स्तर पर पढ़ाई बीच में छोड़ने वाले छात्रों की दर को 20% तक कम करने का प्रस्ताव है। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए निम्नलिखित तरीके अपनाए जाने का प्रस्ताव है :—

(i) सामुदायिक सहभागिता ग्रामीण स्तर से शैक्षिक प्रबन्ध के प्र विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया के माध्यम सूक्ष्म आयोजना;

(ii) पांचवी तथा आठवीं कक्षा पढ़ाई पूरी करने वाले बच्चों की के अनुवीक्षण से बच्चों के रोके रहने शिक्षण पर बल देना तथा कार्यक्रम करना ताकि यह सुनिश्चित हो सके शिक्षा के एक स्तर को पूरा करने सभी बच्चों ने शिक्षा के न्यूनतम स्तरों प्राप्त कर लिया है ;

(iii) आपरेशन ब्लैकबोर्ड योजन क्षेत्र का विस्तार करके, सुविधाओ विस्तार तथा प्राथमिकता तथा प्राथमिक स्कूलों का सुधार;

(iv) औपचारिक स्कूल पद्धति शिक्षा प्राप्त न करने वाले बच्चों के अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम का वि करण तथा सुधार।

(v) प्रारम्भिक शिशु देखरेख शिशु शिक्षा कार्यक्रम के पूर्व-स्कूल को सुदृढ़ करना ;

(vi) स्कूल शिक्षकों की सेवाक तथा सतत शिक्षा के लिए केन्द्रों का वर्क प्रदान करके शिक्षक प्रशिक्षण क्रमों का सुधार तथा विस्तार।

(vii) लक्षित वर्ग संबंधी नीतिय अपनाना तथा लड़कियों तथा अनु० अनु० जनजाति के बच्चों की पहुंच, भागिता तथा उपलब्धि के पृथक लक्ष्य निर्धारण।

(viii) राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 19 परिकल्पित राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति के में अनुपालित रा.शै.अनु. व०प्र० परि० वर्ष 1988 में विकसित राष्ट्रीय पाठ् संरचना कार्यक्रम का कार्यान्वयन।

(ङ) 1991 की जनगणना करते समय रजिस्ट्रार जनरल ने साक्षर व्यक्ति को उस व्यक्ति के रूप में परिभाषित किया है जो किसी भी भाषा में अपनी समझबूझ से लिख और पढ़ सकता है। राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के अंतर्गत व्यक्ति को साक्षर घोषित करने के लिए साक्षरता एवं सांख्यिकी मानदण्ड कुछ भिन्न हैं। निर्धारित मानदण्डों की एक प्रति विवरण के रूप में संलग्न की गई है। (नीचे देखिए) राष्ट्रीय साक्षरता मिशन का मुख्य लक्ष्य, वर्ष 1995 तक 15 से 30 आयु वर्ग में 8 लाख प्रौढ़ निरक्षरों को कार्यात्मक साक्षरता प्रदान करना है।

विवरण

राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के अन्तर्गत थ्री आर में निर्धारित स्तर

पढ़ना :

(क) शिक्षार्थी की अभिरुचि के किसी भी विषय के सरल अंश को सामान्य स्वर से 30 शब्द प्रति मिनट की गति से सस्वर पढ़ना।

(ख) साधारण भाषा के छोटे-छोटे अनुच्छेदों को 35 शब्द प्रति मिन्ट की गति से मन में पढ़ना।

(ग) मार्ग चिन्हों, पोस्टर, सरल निर्देशों तथा नवसाक्षरों के लिए समाचार पत्रों को पढ़ना और समझना।

(घ) अपनी कार्य पद्धति तथा रहन सहन के वातावरण से संबंधित साधारण लिखित संदेशों के अनुपालन करने की योग्यता।

लिखना:

(क) अपनी समझ से 7 शब्द प्रति मिनट की गति से समझ कर नकल करना।

(ख) पांच मिनट प्रति शब्द की गति से श्रुतलेख लेना।

(ग) सही अन्तर तथा सीध में लिखना।

(घ) शिक्षार्थी, प्रति दिन के अपने काम में आने वाले छोटे-छोटे पत्र, आवेदन पत्र तथा प्रपत्र स्वयंमेव लिखे।

गणित:

(क) 1 से 100 तक गिनती पढ़ना तथा लिखना।

(ख) जमा तथा घटाव के बिना हासिल वाले तीन अंकों वाले तथा गुणा तथा भाग के दो अंकों के साधारण प्रश्न (सवाल) हल करना।

(ग) भार, माप, मुद्रा, दूरी तथा क्षेत्र तथा समय मापन की मोट्रिक ईकाइयों का कार्यसाधक ज्ञान।

(घ) अनुपात तथा व्याज (जिसमें अंश शामिल न हों) का व्यापक ज्ञान तथा उनका अपने कार्य तथा जीवन की दशाओं में प्रयोग।

Promotion of group 'D' employees as LDCs in KVS (HK3 and regional officers

2176. SHRI N. E. BALARAM:
SHRI MISA R. GANESAN:

Will the Minister of HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT be pleased to state:

(a) whether it is a fact that the Board of Governors of Kendriya Vidyalaya Sangatsan had approved the proposal